



कक्षा: 10वीं, इतिहास (समाजी हस्स हाख्या)



अध्याय 4. गुरु अंगद देव जी से गुरु तेग बीदर जी तक गुरुओं का योगदान

निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1-15 शब्दों में दीजिए:

1. भाई लहना किस गुरु का पहला नाम था? उत्तर - श्री गुरु अंगद देव

जी। 2. लंगर पार्थ का क्या अर्थ है? उत्तर - वह

प्रथा जिसके अनुसार सभी जातियों और

धर्मों के लोग, अपने मतभेदों के बावजूद, एक ही पंक्ति में एक साथ बैठते हैं और

फेफड़े घुट रहे हैं।

3. गोइंदवाल में बावली की नींव किस गुरु ने रखी थी? उत्तर: श्री गुरु अंगद देव जी। 4.

स्वर्गीय गुरु साहिब से मिलने गोइंदवाल कौन

आए थे? उत्तर: श्री गुरु अमर दास जी। 5. मसम पार्थ के उद्देश्य लिखिए। उत्तर: जशक धर्म के

विकास के लिए धन इकट्ठा करना और जशकों

को संगठित करना। 6. क्या हसीक खान

हिद्रा के चौथे गुरु थे और उन्होंने हिद्रा शहर की स्थापना की थी? उत्तर: जशकों के चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी थे और

उन्होंने रामदासपुर (अंजामरात) शहर की स्थापना की थी। 7. हरमंदिर साहिब की आधारशिला किसने रखी

थी और इसकी आधारशिला किसने रखी थी?

उत्तर - 1589 ई. में, सूफी फकीर साईं मियां मीर जी ने। 8. हरमन दर साहिब के चारों

तरफ दरवाजे रखने का क्या अर्थ है?

उत्तर - इसका अर्थ है कि यह पवित्र स्थान सभी धर्मों, वर्गों और जातियों के लिए खुला है। 9. गुरु अर्जन देव जी द्वारा स्थापित शहरों के नाम लिखिए। उत्तर -

तरनतारन, करतारपुर, हरगोबिंदपुर, छेहरटा।

10. 'दशमांश' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: दसवंद का अर्थ है कि प्रत्येक सिख को अपनी आय का दसवां हिस्सा गुरु जी के नाम पर दान करना चाहिए। 11. आद ग्रंथ साहिब का

संकलन क्यों किया गया? उत्तर: आद ग्रंथ साहिब का संकलन सिखों को गुरु

जी की शुद्ध और प्रामाणिक शिक्षाओं से अवगत कराने के लिए किया गया था।

जागो।

12. क्या आप लंगर पराठे के बारे में भी जानते हैं?

उत्तर-लंगर की प्रथा गुरु नानक देव जी द्वारा शुरू की गई थी और दूसरे गुरु, गुरु साहिब द्वारा इसे विस्तृत किया गया था।

पंक्ति में बैठे हुए किसी भी धार्मिक सम्बंध के लोग कभी नहीं सुनते।

13. गुरु अंगद देव जी ने संगत पार्थिया के दौरान सिख खान को क्या सिखाया?

उत्तर संगत के माध्यम से गुरु जी भक्तों को ऊंच-नीच का भेद भूलकर प्रेम से रहने की शिक्षा देते हैं।

14. गुरु अंगद देव जी के पंगत पार्थ के बारे में जानकारी दीजिए।

उत्तर - गुरु अंगद देव जी ने गुरु नानक देव जी द्वारा शुरू की गई परगट प्रथा को जारी रखा। सभी संगतों को लंगर परोसा गया और गुरु जी की धर्मपत्नी माता खीवी जी ने लंगर परोसा। लंगर प्रथा की शुरुआत के साथ ही गुरु घर की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

15. गुरु अंगद देव जी द्वारा अखाड़े की स्थापना के बारे में लिखिए।

उत्तर- गुरु अंगद देव जी भक्तों को न केवल मन और आत्मा से बलवान बनाते थे, बल्कि वे भक्तों को शारीरिक रूप से भी बलवान बनाना चाहते थे। भक्तों को बलवान बनाने के लिए गुरु अंगद देव जी ने खडूर साहिब में एक अखाड़ा बनवाया था। यहाँ वे भक्तों को व्यायाम कराते थे।

16. क्या आप गोइंदवाल के बारे में जानते हैं? उत्तर-

गुरु अंगद देव जी ने 1546 ई. में गोइंदवाल शहर की स्थापना की थी और गुरु अमरदास जी के शासनकाल में यह शहर सिखों का एक प्रसिद्ध केंद्र बन गया।

17. गुरु अमरदास जी के जाति पर विचार।

उत्तर: गुरु जी ने जातिगत भेदभाव और छुआछूत का कड़ा विरोध किया। उनके अनुसार, जो लोग अपनी जाति पर गर्व करते हैं, वे मूर्ख और वे गवार हैं।

18. सती पार्थ पर गुरु अमरदास जी के क्या विचार थे?

उत्तर: गुरु जी ने सती प्रथा का खंडन करते हुए कहा कि "उस स्त्री को सती नहीं कहा जा सकता जो अपने पति के चिन्ता में लीन रहती है। वास्तव में, सती स्त्री वह है जो अपने पति के वियोग में दुःख सहन करती है।"

19. गुरु अमरदास जी ने जन्म, जीवन और मृत्यु से संबंधित सुधार भी लाए।

उत्तर - उन्होंने जन्म और विवाह के अवसर पर 'आनंद वाणी' सुनाने और मृत्यु के अवसर पर ईश्वर की स्तुति और भक्ति के भजन गाने की प्रथा शुरू की।

20. रामदासपुर या हमीरपुर की स्थापना की तिथि बताइए।

उत्तर: इस शहर की स्थापना के साथ, जस्खाओं को एक अद्वितीय तीर्थ स्थल प्राप्त हुआ और जस्खा धर्म फला-फूला।

21. लाहौर बावली के बारे में जानकारी दीजिए।

गुरु अर्जन देव जी ने उत्तरी लाहौर के दुधी बाज़ार में भौली का निर्माण कराया था। यह भौली सिखों का एक पूजा स्थल है।

तीर्थ स्थल को त्याग दिया गया।

22. गुरु अर्जन देव जी को अहद ग्रंथ की स्थापना करने की आवश्यकता पड़ी?

गुरु अर्जन देव जी ने आने वाली पीढ़ियों को गुरुओं के पूर्ण, शुद्ध और प्रामाणिक ज्ञान से अवगत कराने के लिए आज ग्रंथ का संकलन किया।

23. गुरु अर्जन देव जी के सामाजिक सुधारों से संबंधित दो बातें लिखिए।

उत्तर: विधवा पुनर्विवाह के लिए अभियान चलाना और विधवाओं को नशा करने से रोकना।

24. गुरु अर्जन देव जी और अबीर के बीच संबंध का वर्णन करें।

उत्तर: गुरु अर्जन देव जी और अकीर के बीच घनिष्ठ मित्रता बहुत गहरी थी। गुरु साजिद के अनुरोध पर, उन्होंने पंजाबी किसानों का एक वर्ष का भूमि कर भी माफ कर दिया था।

25. गुरु अर्जन देव जी को शहीद क्यों किया गया?

उत्तर: जहाँगीर को श्री गुरु अर्जन देव जी की बढ़ती लोकप्रियता पसंद नहीं थी।

26. 'मीरी' और 'पीरी' तलवारों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: गुरु हरगोबिंद साहिब जी, गद्दी पर बैठते समय मीरी और पीरी नामक दो तलवारें धारण करते थे। मीरी की तलवार सामाजिक मामलों में उनका मार्गदर्शन करती थी और पीरी की तलवार धार्मिक मामलों में उनका मार्गदर्शन करती थी।

नेतृत्व का प्रतीक.

27. गुरु गोबिंद सिंह जी को हमीरपुर की घेराबंदी के बारे में क्या पता था?

उत्तर: गुरु जी ने शहर की सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर एक दीवार बनवाई। उन्होंने शहर में लोहगढ़ नामक एक किला भी बनवाया। उस किले में आवश्यकतानुसार सैन्य उपकरण रखे जाते थे।

क) निम्नलिखित सरल प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-35 शब्दों में दीजिए -

1. गोइंदवाल में कटोरे का वर्णन करें।

उत्तर: गुरु अंगद देव जी ने गोइंदवाल में जलस्रोत (पानी का झरना) की नींव रखी। गुरु अमरदास जी ने 1559 ई. में जलस्रोत का निर्माण पूरा करवाया। इस जलस्रोत की सीढ़ियों की संख्या 84 थी। गुरु अमरदास जी ने वचन दिया था कि यदि कोई सिख हर सीढ़ी पर सच्चे मन से जपुजी सहीह का पाठ करेगा और 84वीं सीढ़ी पर स्नान करेगा, तो उसके चारों कोने काट दिए जाएंगे। परिणामस्वरूप, सिखों को एक स्वतंत्र तीर्थस्थल प्राप्त हुआ। उन्हें पीने के लिए स्वच्छ जल भी प्राप्त हुआ।

2. मंजी पार्थ का क्या अर्थ है और इसका उद्देश्य क्या था?

उत्तर: गुरु अमरदास जी के समय तक सिखों की संख्या काफी बढ़ गई थी। इस कारण गुरु के लिए पंजाब के शेष हिस्सों में सभी सिखों को उपदेश देना कठिन हो गया था। इसलिए सिखों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए गुरु अमरदास जी ने 'मंजी प्रथा' की स्थापना की। उन्होंने अपने आध्यात्मिक साम्राज्य को 22 जिलों में विभाजित किया। प्रत्येक जिले को एक मंजी कहा जाता था। गुरु जी ने प्रत्येक मंजी के लिए एक प्रभावशाली सिख नियुक्त किया। उस सिख का काम अपने क्षेत्र में गुरु की शिक्षाओं का प्रचार करना था और साथ ही, वह सिखों से प्रसाद लेकर गुरु साहिब तक पहुँचाता था। क्योंकि वह एक चटाई पर बैठकर लोगों को उपदेश देता था। इसलिए, धार्मिक प्रचार की इस प्रथा को 'मंजी प्रथा' के रूप में जाना जाने लगा।

3. गुरु अमरदास जी ने उदासी जनजाति के हसिक खान को कैसे हराया?

उत्तर: गुरु नानक देव जी के निधन के बाद उनके बड़े पुत्र श्री चंद ने उदासी पंथ की शुरुआत की, जिसमें दया के जीवन और त्याग की साधना पर अधिक बल दिया गया, लेकिन त्याग की इच्छा का सच्चे धर्म में कोई स्थान नहीं था।

नहीं। गुरु अंगद देव जी ने उदासीन विचारधारा का खंडन करते हुए कहा कि जो जशक त्याग में विश्वास रखता है, वह जशक नहीं है। इस कारण जशकों ने उदासीन विचारधारा से नाता तोड़ लिया और गुरु की आज्ञा के अनुसार गृहस्थ जीवन जीने का निर्णय लिया।

कोई बात नहीं।

4. गुरु अमरदास जी ने विवाह की रीतियों में कई सुधार किए?

उत्तर- गुरु जी ने 'आनंद' नामक एक भजन की रचना की और सिखों को जन्म, विवाह और अन्य खुशियों के अवसरों पर 'आनंद सहीह' का पाठ करने का आदेश दिया।

इससे सिखों ने व्यर्थ और जटिल कर्मकांडों को त्याग दिया और सिख हिंदुओं से अलग होने लगे।

5. आनंद साहब के बारे में बात करें।

उत्तर- 'आनंद दा साजिह' भजन श्री गुरु अमरदास जी की रचना है। गुरु जी ने सिखों को जन्म, विवाह और अन्य खुशियों के अवसरों पर 'आनंद दा साजिह' का पाठ करने का आदेश दिया था। इस भजन के कारण सिखों ने व्यर्थ और जटिल कर्मकांडों का त्याग कर दिया -

जटिया लोगों ने जटियाग छोड़ दिया और हिंदुओं से अलग होने लगे।

6. रामदासपुर या हमरीटसर की स्थापना का वर्णन कीजिए।

उत्तर - श्री गुरु रामदास जी की सच्चे धर्म के लिए सबसे बड़ी देन रामदासपुर या अंजामृतसर की नींव रखना था। इस तीर्थ स्थल की स्थापना का विचार सबसे पहले गुरु अमरदास जी के मन में आया था। मुगल विद्वान अकिर ने गुरु जी की बेटी भानी को कुछ एकड़ ज़मीन दी थी। गुरु जी ने भक्तों की एक सभा में यह ज़मीन भाई जेठा जी को दे दी और वहाँ 'संतोखसरा' और 'अंजामृतसर' नामक दो झीलें खुदवाने का काम शुरू करवाया। गुरु गद्दी पर बैठने के बाद गुरु रामदास जी स्वयं उस स्थान पर गए और वहाँ रहने लगे। धीरे-धीरे अंजामृतसर झील के आसपास बहुत से लोग बस गए।

तरह-तरह के सामान बेचने वाली दुकानें भी खुल गईं। जिससे यहाँ 'गुरु का बाज़ार' नाम का एक बाज़ार अस्तित्व में आया। इसके साथ ही, एक शहर भी अस्तित्व में आया जिसे 'गुरु चक' या 'चक गुरु रामदास' या 'रामदासपुर' कहा जाता था।

इसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता था। बाद में, अंजामृतसर झील के नाम पर इसका नाम अंजामृतसर रखा गया।

7. हरमंदिर साहिब के बारे में जानकारी दें।

उत्तर - श्री गुरु अर्जन देव जी ने 1588 ई. में अंजामृतसर सरोवर के पास हरमंदर साजिह का निर्माण कार्य शुरू करवाया था। हरमंदर साजिह की आधारशिला 1589 ई. में सूफी फकीर मियां मीर ने रखी थी। हरमंदर साजिह के चारों ओर द्वार बनाए गए थे, अर्थात यह मंदिर सभी जातियों और चारों प्रांतों के लोगों के लिए खुला है। हरमंदर साजिह का निर्माण भाई बुद्धा जी और भाई गुरदास जी की देखरेख में 1601 ई. में पूरा हुआ। मंदिर का निर्माण 1604 ई. में पूरा हुआ।

ई. में हरिमंदर साहिब में आज़ाद ग्रंथ साहिब की स्थापना हुई। वहाँ से पहला ग्रंथ बड़े भाई को दिया गया।

प्रार्थना का उत्तर मिल गया है।

8. क्या आप तरनतारन साहिब के बारे में भी जानते हैं?

उत्तर - श्री गुरु अर्जन देव जी ने 1590 ई. में रावी और जैस नदियों के बीच तरनतारन नामक शहर की नींव रखी। गुरु जी ने इस शहर की ज़मीन खारा जपंद के लोगों से खरीदी और एक जलाशय खुदवाने का काम शुरू करवाया।

इस तालाब का नाम तरनतारन रखा गया। इसका मतलब है कि जो व्यक्ति इसमें स्नान करता है, वह इस पत्थर का मालिक बन जाता है।

भविष्य सागर पार है। धीरे-धीरे उस झील के चारों ओर एक शहर बस गया, जो एक और प्रसिद्ध तीर्थस्थल बन गया।

तीर्थ स्थल जागृत हो गया।

9. सिख धर्म को मासम पार्थ से क्या लाभ होता है?

उत्तर-1. यह प्रथा जशक धर्म के विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण साबित हुई।

2. इससे गुरु साजिद को सार्वजनिक रूप से धन की प्राप्ति होने लगी।

3. चर्चों ने भी सच्चे धर्म के प्रचार और प्रसार में सराहनीय भूमिका निभाई।

4. मसंद प्रणाली के कारण जस्खा संगठित हुए, जिससे जस्खा धर्म का विकास हुआ।

10. आइये हम सारी गुरु रिगोबंद साहिब जी के दैनिक जीवन पर नजर डालें।

उत्तर: श्री गुरु हरगोबिंद साजिद जी सुबह जल्दी उठते, स्नान करते और राजसी पोशाक पहनकर लंगर में जाते। जहाँ उनकी देखरेख में श्रेष्ठ सैनिकों और श्रद्धालुओं को भोजन कराया जाता। इसके बाद, गुरु जी अपने सेवकों, शिकारी कुत्तों और घोड़ों के साथ जसकर जाते। श्रद्धालुओं में नया उत्साह भरने के लिए, वे अपने दरबार के अदुल और नथमल धाड़ियों को वीरता के गीत गाने के लिए लगाते। गुरु जी ने एक विशेष 'संगीत मंडली' भी स्थापित की, जो रात में ढोल-नगाड़ों और मशालों की रोशनी के साथ हरमंदिर साहिब की परिक्रमा करती और ऊँची आवाज़ में भावुक भजन गाती। 11. क्या आप अहल तख्त साहिब के बारे में भी जानते हैं?

उत्तर: श्री गुरु हरगोबिंद साजिह जी ने हज़ार मंदिर साजिह के सामने अकाल तख्त साजिह का निर्माण करवाया था। इसके अंदर एक 12 फुट ऊँचा चबूतरा बनाया गया था, जो राजाओं और बादशाहों के सिंहासन जैसा था। हज़ार मंदिर साजिह में गुरु जी धार्मिक शिक्षा देते थे और उसी चबूतरे पर बैठकर अपने अनुयायियों को राजनीतिक शिक्षा देते थे। वहाँ वे अपने सैनिकों को हथियार बाँटते और ढाड़ियों से वीरता के जोशीले गीत सुनते थे। अकाल तख्त साजिह के पास ही वे अनुयायियों को अखाड़े में प्रशिक्षण देते थे।

12. गुरु अंगद देव जी द्वारा सिख संस्था की स्थापना के लिए दिए गए चार कारणों के बारे में लिखिए।

उत्तर-1. गुरुमुखी हलपी में सुधार - श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरु नानक साहिब की रचनाओं को अंतिम रूप देने के लिए पंजाबी हलपी में सुधार किया और इसे 'गुरुमुखी' नाम दिया। गुरु अंगद देव जी ने पंजाबी हलपी के प्रचार के लिए 'वाल होध' भी तैयार किया।

2. लंगर पराठा - श्री गुरु नानक देव जी द्वारा शुरू किये गये लंगर पराठे को गुरु अंगद देव जी ने और विकसित किया। श्री गुरु अंगद देव जी की पत्नी माता खीवी जी लंगर सेवा करती थीं। इस प्रथा से गुरु घर की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई।

3. संगत पार्थ - श्री गुरु अंगद देव जी प्रतिदिन सुबह खड्डर साहीह में धार्मिक प्रार्थना करते थे।

उन्होंने लोगों को जीवन के स्थापित नियमों के अनुसार जीवन जीने का आदेश दिया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को प्रभु का नाम जपने और जातक धर्म के सिद्धांतों का पालन करने की शिक्षा दी। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को अपने दस नाखून काटने, पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाने और समाज की सेवा करने पर ज़ोर दिया, जिसके कारण लोग जातक धर्म की ओर आकर्षित होने लगे।

4. शारीरिक प्रशिक्षण का अभ्यास - गुरु साजिद अपने शिष्यों को न केवल मन और आत्मा से प्रशिक्षित करते हैं, बल्कि उन्हें शारीरिक रूप से भी प्रशिक्षित करना चाहते हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने खड्डर साजिद में एक अखाड़ा बनवाया है जहाँ वे अपने शिष्यों को प्रशिक्षण देते हैं।

13. सिख धर्म में पार्थिव देह का अभ्यास भक्तों के जीवन में किस प्रकार लाभदायक रहा है?

उत्तर: 'अंजामृत' और 'संतोखा' तालाबों की खुदाई और रामदासपुर या अंजमृत शहर के निर्माण के लिए बहुत धन की आवश्यकता थी। इसके लिए श्री गुरु रामदास जी ने अपने कुछ भक्तों, जशकों को धन संग्रह हेतु अनेक स्थानों पर भेजा, जिन्हें 'मसंद' के नाम से जाना गया। जशकों से धन संग्रह करने के साथ-साथ उन लोगों ने जशक धर्म का प्रचार भी किया। इस प्रकार, मसंद प्रणाली के परिणामस्वरूप जशक धर्म का व्यापक प्रचार हुआ और अनेक गैर-जशकों ने भी जशक धर्म को अपना लिया।

14. श्री गुरु अर्जन देव जी की शहादत तेनो हल्खो में दर्ज है।

उत्तर: दो मुगल सम्राट अखीर और जहाँगीर गुरु अर्जन देव जी के समकालीन थे। गुरुओं की शिक्षाओं का उद्देश्य जाति, उत्पीड़न, भेदभाव और धर्म से मुक्त समाज की स्थापना करना था। अखीर गुरु साहिब को पसंद करते थे। जहाँगीर को गुरु अर्जन देव जी की बढ़ती लोकप्रियता पसंद नहीं थी। वह इस बात से भी नाराज थे कि जहाँ हिंदू गुरु साहिब के अनुयायी बन रहे थे, वहीं कुछ मुसलमान भी उनसे प्रभावित हो रहे थे। राजकुमार खुसरो ने अपने पिता जहाँगीर के खिलाफ विद्रोह कर दिया। जब शाही सेना ने खुसरो का पीछा किया, तो वह पंजाब भाग गया और गुरु साजिद से मिला। जहाँगीर, जो पहले से ही गुरु अर्जन देव जी के खिलाफ कार्रवाई करने का बहाना ढूँढ रहा था, ने राज्य के हड़पने वाले खुसरो की सहायता करने के लिए गुरु साजिद पर दो लाख रुपये का जुर्माना लगाया। गुरु ने इसे अन्यायपूर्ण मानते हुए इस जुर्माने को देने से इनकार कर दिया। जिसके कारण उन्हें श्रीनगर निर्वासित कर दिया गया।

1606 ई. में उन्हें यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया।

ग) निम्नलिखित सरल प्रश्नों के उत्तर लगभग 100-120 शब्दों में दीजिए -

1. गुरु ग्रंथ साहिब जी ने सिख धर्म के विकास में क्या योगदान दिया?

उत्तर-1. गुरु साहिब ने पंजाबी लिपि को परिष्कृत किया और इसे गुरुमुखी नाम दिया।

2. पंजाबी जलपी के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने 'वाल होध' भी तैयार किया।

3. उन्होंने गुरु नानक देव जी के परिवार को एकत्रित किया और उसकी देखभाल की।

4. गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा शुरू की गई लंगर की परंपरा को जारी रखा, जिसके कारण गुरु घर की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

5. गुरु जी ने लोगों को परपीड़क मानसिकता से मुक्त किया।

6. गुरु जी ने नाम जपने और नाई जातक के सिद्धांतों का पालन करने के साथ-साथ दस कीर्तों लगाने और पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने पर भी जोर दिया।

7. लोगों के शारीरिक मनोरंजन के लिए गुरु जी ने खड्डर साहीह में एक अखाड़ा बनवाया।

8. उन्होंने 62 पद्यों की रचना की जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं।

9. गुरु साहिब ने गोइंदवाल साहिब की नींव रखी जो श्रद्धालुओं के लिए एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल बन गया।

2. गुरु अमरदास जी ने सिख धर्म के प्रसार के लिए क्या किया?

उत्तर-1. श्री गुरु अमर दास जी का विवाह जुलाई 84 में गोइंदवाल में श्री गुरु अंगद देव जी के साथ हुआ था।

गुरुजी ने वचन दिया कि यदि कोई भक्त प्रतिदिन सच्चे मन से जपुजी सहीह का पाठ करेगा और 84वें दिन स्नान करेगा तो उसकी संख्या 84 हो जाएगी। इससे भक्तों को निःशुल्क तीर्थ स्थान प्राप्त हुआ।

2. उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा शुरू की गई लंगर व्यवस्था को विस्तार से समझाया। यह व्यवस्था सच्चे धर्म के प्रचार में एक सशक्त माध्यम बन गई।

3. गुरु जी ने अपनी कविताएं स्वयं लिखीं और कई भक्तों के पदों और भजनों का संग्रह भी किया।

4. गुरु जी द्वारा मंजी प्रणाली की स्थापना के साथ, जशक धर्म का बहुत विस्तार हुआ।

5. उन्होंने जातिगत भेदभाव और छुआछूत का विरोध किया। उनके अनुसार, जो लोग जाति का सम्मान करते हैं, वे मूर्ख और वे ग्रामीण हैं।

6. गुरु जी ने मृतक को मृत्यु के अवसर पर ईश्वर की स्तुति और भक्ति के भजन गाने का आदेश दिया।

7. उन्होंने विवाह संबंधी रीति-रिवाजों में सुधार के लिए 'आनंद' नामक भजन की रचना की और सिखों को जन्म, विवाह और अन्य खुशी के अवसरों पर आनंद के भजनों का पाठ करने का आदेश दिया।

8. गुरु जी ने जसखाओं को वैसाखी, माघी और दिवाली के त्यौहारों को नए तरीके से मनाने के लिए कहा, जिससे जसखा धर्म का प्रचार और प्रसार हुआ।

3. श्री गुरु अमरदास जी द्वारा शुरू किए गए सुधारों का वर्णन करें।

उत्तर-1. श्री गुरु अमरदास जी का विशेष उद्देश्य लोगों को व्यर्थ और जटिल कर्मकांडों से मुक्त कराना था।

2. वे जातिगत भेदभाव और छुआछूत के विरोधी थे। उनके अनुसार, जो लोग जाति का सम्मान करते हैं, वे मूर्ख और वे ग्रामीण हैं।

3. उन्होंने जाति-पाति और छुआछूत को खत्म करने के लिए यह आदेश दिया है कि जब कोई व्यक्ति उनसे मिलने आएगा तो वह सबसे पहले एक पंक्ति में बैठेंगे और सबके साथ भोजन करेंगे।

4. श्री गुरु अमरदास जी ने स्त्री प्रथा का खंडन करते हुए कहा कि जो स्त्री अपने पति की चिंता में लीन रहती है, उसे स्त्री नहीं कहा जा सकता। वास्तव में, स्त्री वह स्त्री है जो अपने पति के वियोग का दुःख और वेदना सहती है।

5. गुरु जी ने घूँघट प्रथा पर रोक लगाते हुए कहा कि घूँघट प्रथा महिलाओं के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास में एक बड़ी बाधा है। उन्होंने घूँघट करने वाली महिलाओं को लंगर परोसने और साधुओं की संगति में बैठने का आदेश दिया।

6. गुरु जी ने नशीले पदार्थों के प्रयोग की कड़ी निंदा की और सिखों को इस बुराई से दूर रहने का आदेश भी दिया।
जड्डा.

7. गुरु ने जन्म, विवाह और मृत्यु से संबंधित जटिल अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों में भी सुधार किया।

4. श्री गुरु रामदास जी ने सिख धर्म के विकास के लिए क्या प्रयास किए?

उत्तर-1. श्री गुरु रामदास जी ने अंजमरतसर शहर की स्थापना की और इसे लोगों के लिए एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल और एक वाणिज्यिक केंद्र बनाया।

2. गुरु जी ने उदासीन संप्रदाय के नेता जिधि चंद से मुलाकात की और एक महत्वपूर्ण बातचीत की, जिसके कारण उदासीनों ने जकों का विरोध करना बंद कर दिया।

3. समाज सुधार के लिए, गुरु जी ने विवाह की रस्मों से संबंधित गीतों की रचना की। उन्होंने विवाह में महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले गीतों और नृत्यों की भी रचना की। उन्होंने भक्तों को विवाह में इन गीतों का अभ्यास करने का आदेश दिया।

4. गुरु जी ने 679 कविताओं की रचना की।

5. गुरु जी के आदेश पर अकीर ने पंजाब के किसानों का एक वर्ष का भूमि कर माफ कर दिया।

6. गुरु जी ने अपने सबसे छोटे पुत्र गुरु अर्जन देव जी को गुरु पद प्रदान किया।

5. श्री गुरु अर्जन देव जी ने सिख धर्म के विकास में भी योगदान दिया?

उत्तर- 1. श्री गुरु अर्जन देव जी ने अंजामृतसर और संतोखसर सरोवर का निर्माण पूरा किया और भाई बुड्डा जी की मदद से उन्होंने अंजामृतसर शहर का निर्माण भी पूरा किया।

2. गुरु जी ने अंजमृतसर सरोवर के मध्य में भव्य हजार मंदिर साहिब का निर्माण शुरू करवाया और इसके चारों तरफ दरवाजे लगाए गए, जिससे यह संकेत मिलता है कि यह मंदिर सभी जातियों और सभी चार प्रांतों के लोगों के लिए खुला है।

3. गुरु जी ने तरनतारन, करतारपुर और हरगोज के नए शहरों की स्थापना की।

4. उन्होंने अंजलि से कुछ मील पश्चिम में पानी की कमी को पूरा करने के लिए एक छह-छेद वाला कुआँ खोदा। धीरे-धीरे उसके आसपास एक शहर भी बस गया, जिसे अब 'छह-छेद' कहा जाता है।

5. गुरु जी ने लाहौर के धी बाज़ार में एक दरगाह बनवाई थी। इस दरगाह के निर्माण के बाद, वह दरगाह भी सिखों का तीर्थस्थल बन गया।

6. गुरु जी ने सभी से अपनी आय का दसवां हिस्सा यानी दसवंध गुरुद्वारे को दान करने को कहा।

7. गुरु जी ने भक्तों को सच्चे गुरुओं के शुद्ध और प्रामाणिक ज्ञान से अवगत कराने के लिए आज ग्रंथ साहिब का संकलन किया।
हो गया।

8. गुरु जी ने सिखों को घोजरों का व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे राजकोष में धन की वृद्धि हुई।

9. उन्होंने तरनतारन में कुछ रोगियों के लिए एक अलग कॉलोनी स्थापित की और उन्हें मुफ्त भोजन, कपड़े और दवाइयाँ भी प्रदान कीं।

10. गुरु जी का उद्देश्य जाति-पाति, ऊँच-नीच और धर्म के भेदभाव से मुक्त समाज की स्थापना करना था।

6. आइए मसम पराठा की उत्पत्ति, रीति-रिवाज और लाभों के बारे में बात करते हैं।

उत्तर-मसंद प्रणाली श्री गुरु रामदास जी द्वारा आरंभ की गई थी और श्री गुरु अर्जन देव जी ने इसे सुव्यवस्थित और विकसित किया। उनके काल में सिखों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई और उन्होंने सिख धर्म के विकास के लिए हरमंदर साही, संतोख, तरनतारन, करतारपुर, हरगोजिंदपुर आदि नगरों की स्थापना की। उपरोक्त

कार्य को पूरा करने और लंगर व्यवस्था को चलाने के लिए धन की भी आवश्यकता थी। चूंकि विभिन्न समूहों से दान के रूप में पर्याप्त और नियमित रूप से धन प्राप्त नहीं हो रहा था, इसलिए गुरु अर्जन देव जी ने मसंद व्यवस्था को पुनर्गठित किया।

और संगठन के लिए कई अनुष्ठान किए गए –

1. प्रत्येक वर्ष दसवन्ध अर्थात अपनी आय का दसवां भाग गुरु के नाम पर अर्पित करना।

2. दशमांश इकट्ठा करने के लिए विशेष प्रतिनिधि नियुक्त किए गए। वे एकत्रित धन को वैसाखी के दिन अंजमिस्त्र में गुरु की समाधि पर जमा करेंगे।

3. जिन क्षेत्रों में चर्च स्वयं धन एकत्र करने नहीं जा सकता, वहां वह अपने प्रतिनिधि भेजेगा जो

इन्हें चर्च या सोसायटी कहा जाता है।

4. धन संग्रह के साथ-साथ भिक्षु जशक धर्म का प्रचार भी करते हैं।

यह प्रथा जशक धर्म के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। परिणामस्वरूप, गुरु साजिह को सार्वजनिक रूप से धन प्राप्त होने लगा, जिससे गुरु साजिह जशक धर्म के संगठन और विकास से संबंधित अपनी योजनाओं को क्रियान्वित कर सके।

ठीक है।

7. सरी गुरु रिगोबंद साहिब जी की नई नीति का वर्णन करें।

उत्तर-1. श्री गुरु अर्जन देव जी की शहादत के बाद की स्थिति को समझते हुए, सिखों में साहस और आत्मविश्वास की भावना जगाने के लिए, गुरु जी ने 'मीरी' और 'पीरी' नामक दो तलवारें धारण कीं। मीरी की तलवार सामाजिक मामलों में नेतृत्व करती है और पीरी की तलवार धार्मिक मामलों में नेतृत्व का प्रतीक है।

2. गुरु जी ने कलगी का शाही श्रृंगार किया और 52 अंग राजखाक रखे।

3. गुरु जी ने धन के स्थान पर जसखाओं से घण्टे और शास्त्रों का दान स्वीकार करना शुरू कर दिया, जिससे सेना के निर्माण में सुविधा हुई।

4. उसने पांच सौ जशकों को पांच समूहों में विभाजित करके जशक सेना का संगठन शुरू किया।

5. भक्तों में नया उत्साह भरने के लिए गुरु जी ने अपने दरबार के अदुल और नत्था मल्ल संगीतकारों को भी वीर रस के पद गाने के लिए नियुक्त किया।

6. गुरु जी ने हरमंदिर साहिब के पश्चिम में अकाल तख्त का निर्माण कराया और उसके अंदर चौदह फुट ऊंचा मंच बनवाया, जहां बैठकर वे सिखों को राजनीतिक शिक्षा देते थे।

7. गुरु जी ने शहर की सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर एक दीवार बनवाई और शहर में लोहगढ़ नामक एक किला भी बनवाया। इसमें आवश्यकतानुसार सैन्य उपकरण रखे जाते थे।

8. गुरु जी द्वारा किए गए उपर्युक्त कार्यों के कारण, शहीद गुरु अर्जन देव जी की आत्माएं पुनर्जीवित हो गईं।

8. नई नीति के अलावा गुरु गोबिंद सिंह जी ने सिख धर्म के विकास के लिए और क्या उपाय किए?

उत्तर-1. गुरुजी ने प्रसिद्ध साहिब नगर का निर्माण किया। 1635 ई. में गुरुजी इस नगर में बस गए।

जला दिया.

2. उन्होंने गुरु अर्जन देव जी की स्मृति में लाहौर में एक गुरुद्वारा डेरा साहिब का निर्माण कराया।

3. गुरुजी ने जसखा धर्म के प्रचार के लिए चार मुख्य प्रचारकों, अलास्मत, फूल, गौड़ा और इलुहसाना को नियुक्त किया।

4. अपना अंत निकट देखकर गुरुजी ने अपने पोते हजाराय जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

9. सिख धर्म के विकास के लिए गुरु हर राय जी की माता का वर्णन कीजिए।

उत्तर-1. गुरुजी ने जशक धर्म के प्रचार के लिए प्रचारक नियुक्त किए और धार्मिक यात्राएं भी कीं।

2. गुरुजी ने नाथणा (जिठणा) में फूल नामक एक मूक व्यक्ति को वरदान दिया कि वह बहुत महान, प्रसिद्ध और धनवान बनेगा।

वह व्यक्ति स्वीकार कर लिया जाएगा। गुरुजी की प्रतिज्ञा सत्य निकली। राजाफूल के वंशज, जो प्रतियाला, नाभा और जींद राज्यों के शासक थे।

केवल सो जाओ।

3. गुरुजी ने शाहजहाँ के पुत्र दारा जशोख की सहायता की, जो युद्ध में पराजित हुआ था।

4. औरंगज़ेब ने गुरु हर राय को दारा शिकोह को दी गई मदद के बारे में पूछताछ करने के लिए दिल्ली भेजा। वह गुरु जी से यह भी पूछना चाहता था कि क्या सिख धर्म मुस्लिम धर्म के विरुद्ध नहीं है। गुरु जी ने स्वयं दिल्ली जाने के बजाय अपने ज्येष्ठ पुत्र राम राय को, जो उस समय 14-15 वर्ष के थे, भेजा। औरंगज़ेब ने आसा के युद्ध में दिए गए पदों में 'मुस्लिम' शब्द का उल्लेख किया है।

जब शब्द की व्याख्या स्वीकार कर ली गई, तो राम राय ने चतुराई से उत्तर दिया कि इस आयत में 'मुस्लिम' शब्द भूल से आ गया है और असली शब्द 'वीरमन' है। इस उत्तर से मुगल बादशाह औरंगजेब तो प्रसन्न हुआ, लेकिन गुरु हाजी राय बहुत दुखी हुए।

5. राम राय ने औरंगजेब के सामने गुरु नानक देव जी के साथ विश्वासघात करके कायरता का परिचय दिया, जिससे गुरु जी उनसे क्रोधित हो गए और इस घटना के बाद उन्होंने अपने छोटे और पाँच वर्षीय पुत्र हरजीकृष्ण जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

थापा ने दिया।

10. श्री गुरु हरि सिंह जी ने सिख धर्म के विकास में भी योगदान दिया?

उत्तर-1. श्री गुरु हरकृष्ण जी ने पांच वर्ष और तीन महीने की आयु में गुरु पद ग्रहण किया। उन्हें 'वाल गुरु' भी कहा जाता है। उन्होंने सच्चे धर्म का प्रचार और प्रसार करने के लिए महान कार्य किया।

2. गुरु जी के बड़े भाई राम राय गुरु पद के कारण उनसे ईर्ष्या करने लगे क्योंकि गुरु हरकृष्ण जी उनके आदेशानुसार सच्चे धर्म का प्रचार और प्रसार कर रहे थे। राम राय ने गुरु पद पर अपना अधिकार जताया और औरंगज़ेब से इसकी शिकायत की।

3. औरंगज़ेब दोनों भाइयों की अज्ञानता का पूरा फ़ायदा उठाना चाहता था और उसने श्री गुरु हरकृष्ण जी को दिल्ली आने का संदेश भेजा। गुरु जी 1664 ई. में अपनी माता और कुछ सिखों के साथ कीर्तिपुर से दिल्ली के लिए रवाना हुए। रास्ते में वे सिख धर्म का प्रचार और प्रसार करते रहे। इसके लिए दुनिया भर में हज़ारों अन्य समूह भी उनके साथ जुड़ गए।

4. जब गुरु जी दिल्ली पहुँचे तो वे राजा जय सिंह के महल में ठहरे हुए थे और उन्होंने दासियों के बीच राजा की रानी को पहचान लिया और उनसे विवाह कर लिया।

राजा गुरु की अंतर्दृष्टि से बहुत प्रभावित हुए और आज गुरुद्वारा सिंह सभा को सिंघला सहाय के नाम से जाना जाता है।

5. जब गुरु हरकृष्ण जी वहाँ पहुँचे, तो हैजा और चेचक जैसी बीमारियाँ फैली हुई थीं। गुरु जी और उनके अनुयायियों ने बीमारों और ज़रूरतमंदों की भरपूर मदद की।

6. दिल्ली प्रवास के दौरान गुरु जी को चेचक हो गया और तेज़ बुखार हो गया। 30 मार्च, 1664 को उनका निधन हो गया।

वे चले गये हैं।

7. ज्योति ज्योत जलाने से पहले, उन्होंने पाँच सिक्के और एक नारियल माँगा और उन्हें 'वाह काला' कहते हुए चक्र में घुमाया। इन शब्दों का अर्थ है कि उनके वंशज काल जपंड (अंजामृत) के समान हैं और वे उनके दादा हैं।

11. सारी गुरु तेग बीदर जी के मालवा तीर्थ का वर्णन करें।

उत्तर- 1672-73 ई. के आरंभ में गुरु तेग बहादुर जी ने मालवा और चंगर प्रदेश में सिख धर्म का प्रचार और प्रसार करने का निश्चय किया। इस कार्य हेतु वे लगभग दो वर्ष तक मालवा और चंगर प्रदेश में रहे। वे जहाँ भी गए, वहाँ आज भी एक ऐतिहासिक गुरुद्वारा विद्यमान है। इस क्षेत्र में गुरु साहिब द्वारा की गई यात्राओं का विवरण इस प्रकार है-

चक नानकी छोड़ने के बाद गुरु जी ज़फ़र दूसरी बार शैफ़ाबाद गए। सैफ़ुद्दीन ने उनके साथ बहुत आदर और सम्मान से पेश आया। शैफ़ाबाद से गुरु तेग बहादुर जी पजीताला गए। उन्होंने उस स्थान का दौरा किया जहाँ अब दुखी जानवर रहते हैं, गुरुद्वारा साजिह। वहाँ से वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ मोती बाग वाला गुरुद्वारा साजिह स्थित है। पजीताला से गुरु तेग बहादुर जी मुलोवाल जपिंड गए। वहाँ पानी की कमी थी। उन्होंने वहाँ एक कुआँ खोदा। मुलोवाल से वे जापान और सेखा गए। सेखा से वे जधलवान, खीवा, स्माँव गए। भीखी, जखाला, मौर, तलवंडी, झिटंडा और धमधान की पूजा की गई। गुरु जी से प्रभावित होकर हजारों लोग उनके भक्त बन गये। गया।

संदर्भ: हरिद्वार जैनसंघ (राज्य संसाधन प्रश्न, सामाजिक विज्ञान) एस.एस.ई.आर.टी; पंजाब
रणजीत कौर (लाखे इतिहास) एस.एस.एस. स्कूल छिन्ना गेट, गुरदासपुर और
मनदीप कौर (एस.एस. जैमस्ट्रेस) एस.के.एस.एस.एस.दखा, लुजधाणा।आष्टा।